B.A. III Hons I paper

कम्बुज के सामाजिक जीवन

Social life of Cambuj

कम्बुज की सामाजिक व्यवस्था भारतीय वर्णाश्रम धर्म के आधार पर बनी थी। इसमें अन्तर्जातीय विवाह का भी स्थान बन गया था। स्थानीय मातृक व्यवस्था उस देश में प्रचलित थी। भारतीय सामाजिक परम्परा ने जिसमें पिता से ही वंशावली चलती है, स्थानीय व्यवस्था को मिटाने की प्रयास नहीं किया गया। लेखों में कम्बुज सम्राटों ने कौण्डिन्य के अतिरिक्त सोमा को भी अपने पूर्वजों की श्रेणी में स्थान दिया है तथा पुत्र के अतिरिक्त माता की ओर के सम्बन्धी भी राज्य पर अपना अधिकार समझते थे। कम्बुज लेखों में कुछ नाम भारतीय तथा ख्मेर शब्दों से मिलकर बने हैं। लेखों के आधार पर हम वर्ण-व्यवस्था, वैवाहिक सम्बन्ध तथा स्त्रियों के स्थान, वेष-भूषा, भोजन, मनोरंजन, क्रीड़ा, दास-व्यवस्था तथा दाह संस्कार इत्यादि व्यवस्था कम्बुज के सामाजिक जीवन में प्रचलित था।

वर्ण-व्यवस्था → कम्बुज के लेखों में चतुर्वर्ण (चार) वर्णों का उल्लेख मिलता है जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों का प्रचलन कम्बुज के समाज में था। ब्राह्मण लोगों का समाज में सबसे ऊँचा स्थान था और उनके वैवाहिक सम्बन्ध राजवंश में भी स्थापित होते थे। वैश्य का किसी लेख में व्यक्तिगत रूप से उल्लेख नहीं है जबकि वे समाज के अंग थे। इन जातियों के अतिरिक्त अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न सन्तानों का भी लेखों में उल्लेख मिलता है। लेखों में कुछ ऐसे भी नाम मिलते हैं जिनमें स्थानीय और भारतीय सम्मिश्रण है।

ब्राह्मणों के ही समान क्षत्रिय वर्ण को कम्बुज के समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। वहाँ के राजकुल प्रायः क्षत्रिय वर्ण के थे। वहाँ के निवासियों में जो उच्चकुल के लोग थे उन्होंने भारतीय धर्म और संस्कृति को अपना लिया था। कम्बुज में ब्राह्मणों और क्षत्रिय के बीच वैवाहिक सम्बन्ध होना प्रचलित था।

कम्बुज के समाज में अन्य वर्णों के शूद्रों की भी सत्ता थी जिनकी स्थिति दासों के सदृश्य थी। वहाँ के अभिलेखों एवं चीनी विवरणों से इन वर्णों का विवरण मिलता है।

Scanned with CamScanner

वैवाहिक सम्बन्ध →

ब्राह्मण जिसवर्ग में चाहे वह विवाह कर सकते थे। परन्तु ब्राह्मण कन्याएं ब्राह्मणों के अतिरिक्त केवल राजवंश में वैवाहिक सम्बन्ध हो सकता था। इस तरह कम्बुज के समाज में बहुत से वैवाहिक सम्बन्धों की जानकारी मिलती है। राजा जयवर्मन II की एक ब्राह्मण कन्या से तथा जयवर्मन सप्तम की दोनों रानीयाँ ब्राह्मण कन्याएं थी। वहाँ विधवा विवाह प्रचलित था। जबकि यह भारतीय धर्मशास्त्र के विरुद्ध है क्योंकि विधवा विवाह उसके दिवंगत पति के छोटे भाई के साथ हो सकता था।

वस्त्र, आभूषण और श्रृंगार →

इस सम्बन्ध में अंकोरवाट में अंकित चित्र तथा चीनी वृतान्त के आधार पर विवरण दिया जा सकता है चित्रों में भारतीय धोती मुख्य रूप से दिखायी गई है। कन्धे को ढकने के लिए एक प्रकार के दुपट्टे का प्रयोग होता था। 'दक्षिण-चिन का इतिहास' के अनुसार उच्चवर्गों के लोग कढ़े और रेशमी वस्त्र पहनते थे। स्त्रियां लंबा लंहगा पहनती थी। श्रृंगार के लिए दर्पण का प्रयोग होता था। लेखों में चाँदी की मूठ लगे दर्पणों का उल्लेख मिलता है चीनी वृतान्तों से पता चलता है कि स्त्रियाँ अपने हाथ-पैरों को रंगती थी और बाल संवारकर ऊपर जूड़ा बाँधती थी।

भोजन :→

लेखों के अनुसार कम्बुज निवासियों का मुख्य भोजन तंडुल था जो कि पकाया जाता था। व्यंजन के लिए नमक, जीरा, तथा इलायची डाली जाती थी तथा तेल और मधु का भी प्रयोग होता था। ता-प्रोम के लेख में भोजन-पदार्थों में स्वार्थ अक्षत, मुद्‌गा, घृत, दधि, क्षीर, गुड़, तेल, मधु का उल्लेख मिलता है। मक्खन का भी उल्लेख मिलता है।

मनोरंजन →

कम्बुज में नृत्य, गायन, और नाटक मनोरंजन के मुख्य साधन थे। नर्तकियां गायन और वादन में पारंगत थी और वे वीणा, दुंदुभि और ताल का प्रयोग करती थी। इसके अतिरिक्त पुरुष भी नृत्य-कला में प्रवीण थे। नर्तकियां प्रायः मन्दिरों को अर्पित की जाती थी कम्बुज में नाटक भी खेले जाते थे। जयवर्मन की साली ने एक नाटक रची थी जिसकी चर्चा जातकों में की गई है।

Scanned with CamScanner

ज्यवर्मन ~~पंचम~~ पंचम का गुरु प्रसिद्ध कलाकार और नाटककार भी था। इसके अतिरिक्त मनोरंजन के साधनों में "मुर्गयुद्ध" तथा उत्सवों का भी उल्लेख है। इस प्रकार अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधन थे।

स्त्रियों की दशा :→

कम्बुज के समाज स्त्रियों का स्थान आदरणीय था जिसका मुख्य कारण था मातृक व्यवस्था तथा भारतीय संस्कृति का प्रभाव। कुछ लेखों में माँ की ओर से वंशावली दी गई है परन्तु पिता का स्थान श्रेष्ठ था। इसी से पुत्र के अधिकार होते थे। एक लेख में पुत्र द्वारा पिता की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए तर्पण का उल्लेख मिलता है। अतः कम्बुज के सामाजिक जीवन स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान था।

मृतक-संस्कार →

मृतक-संस्कार के सम्बन्ध में लिअंग-वंश का इतिहास से पता चलता है कि मृतक का चार प्रकार से अन्तिम संस्कार किया जाता था। जलाकर, मृतक के शरीर को नदी में फेंक कर, भूमी में गाड़कर और खुले स्थानों पर पशु-पक्षियों को खाने के लिए छोड़ देना। दाह कर्म करते समय मूंछ और बाल बनवा लिये जाते थे। सुई वंश के इतिहास में महत्वपूर्ण वृतान्त मिलता है। इस ग्रन्थ के अनुसार मृतक के वंशज सात दिन तक नतो कुछ खाते हैं और न बाल बनवाते हैं। मृतक शरीर के पास पुरोहित प्रार्थना करते थे। मृतकों को लकड़ियों से जलाकर दाह-संस्कार किया जाता था तथा जले हुए अस्थि शरीर को किसी चाँदी या सोने के पात्र में रखकर नदी में फेंक दिया जाता था।

इस प्रकार लेखों, चीनी स्रोतों तथा कला के आधार पर प्राचीन कम्बुज देश की सामाजिक व्यवस्था का केवल रेखा चित्र ही खींचा गया है। भारतीय संस्कृति का प्रभाव कम्बुज पर पूर्णतया आधारित था। वर्ण व्यवस्था में वैश्यों का कहीं उल्लेख नहीं पर वे भी समाज के अंग थे। ब्राह्मण की प्रधानता भारतीय सामाजिक व्यवस्था की भांति कम्बुज में भी प्रधानता थी जिनका वैवाहिक सम्बन्ध राजवंशों में स्थापित होता था। वास्तव में कम्बुज की सामाजिक व्यवस्था भारतीय संस्कृति और समाज का ही सुदूरपूर्व में एक अंग बनी रही।

=

Scanned with CamScanner